Мемориальная библиотека семьи Митусовых в Музее-институте семьи Рерихов.

НИКОЛАЙ РЕРИХ
ВРАТА В БУДУЩЕЕ
ROERICH
ADAMANT

НИКОЛАЙ РЕРИХ
НИКОЛАЙ РЕРИХ
ВРАТА В БУДУЩЕЕ
1936
IZDEVNIECĪBA «UGUNS» RIGA
МЕТЕРЛИНКЪ
Д.И. МИТРОХИНЪ
ПРЕДИСЛОВІЕ Н. РЕРИХА
СТАТЬЯ А. МАНТЕЛЬ
МЕТЕРЛИНКЪ
РУССКІЕ ХУДОЖНИКИ
Н.К. РЕРИХЪ
ИЗДАНІЕ ОБЩИНЫ СВ. ЕВГЕНІИ
Брату Борису
1926
Москва.

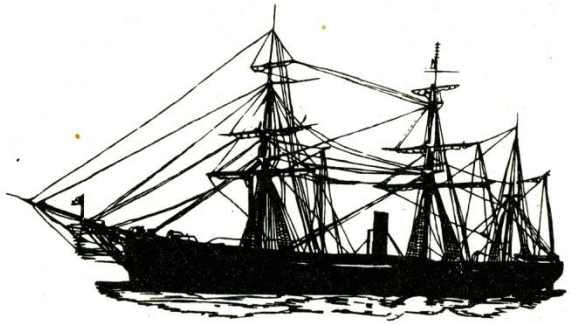

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С.МИТУСОВА * САНКТ-ПЕТЕРБУРГ *

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С.МИТУСОВА * САНКТ-ПЕТЕРБУРГ *

коб. М.М.

Николай Рерих

Письмена

ГМИСР
БИБЛИОТЕКА
Инв. № 2131/1

СОВРЕМЕННИК МОСКВА 1974

ММ от Саши Батурина

ММ от Саши Батурина

М.М.

A. V. YAREMENKO, B.S., M.B.A.

NICHOLAI KONSTANTINOVICH ROERICH

HIS LIFE AND CREATIONS DURING THE PAST FORTY YEARS

1889-1929

With 122 plates, of which 36 are in four colors and 86 in two colors or tinted half tones

PUBLISHERS
CENTRAL BOOK TRADING COMPANY
NEW YORK
1931

This Edition

is limited to Five Hundred Copies,

printed on specially made Nubian paper,

of which this is No. 2

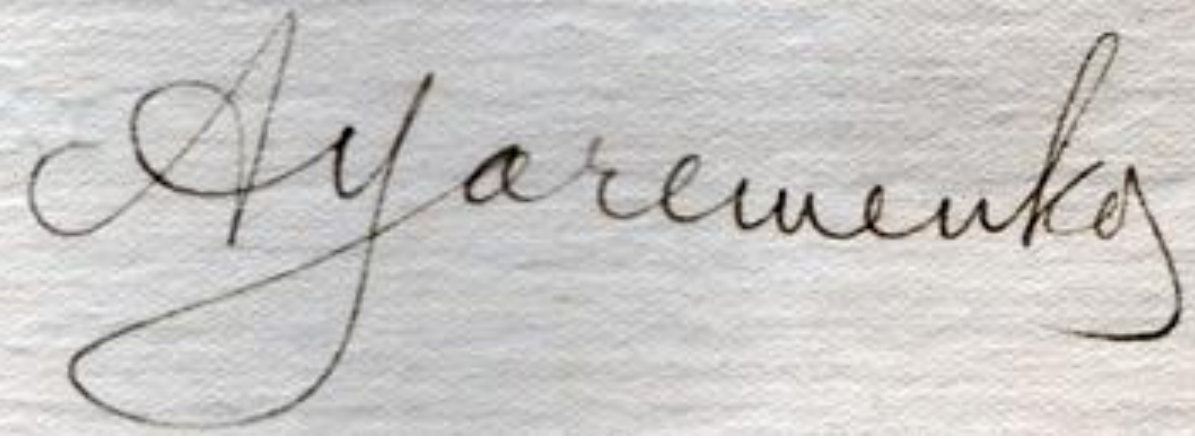

ROERICH MUSEUM

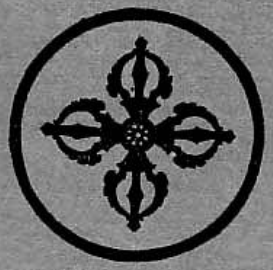

JOURNAL
of
URUSVATI

HIMALAYAN RESEARCH INSTITUTE

VOL. I No. I

ROERICH MUSEUM PRESS
NEW YORK MCMXXXI

भारत INDIA

निकोलाई रोयरिख

स्मारक डाक-टिकट

NICHOLAS ROERICH

COMMEMORATION STAMP

9-10-74

'इन ब्यूटी वी ग्रार यून.इटेड
इा. ब्यूटी वी प्रे
विथ ब्यूटी वी कांकर'

(हम सभी सौंदर्य-पाश से बंधे हैं,
सुंदरता हमारी आराधना का सोपान है,
सौंदर्य से ही हमारी विजय है)

—यह था बहुमुखी प्रतिभा वाले प्रो. निकोलाई रोयरिख का जीवन-दर्शन। उनकी रचनात्मक गतिविधियां विविध और प्रचुर थीं। इनके कारण उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी।

रोयरिख एक श्रेष्ठ कलाकार, वैज्ञानिक, शिक्षक, दार्शनिक, लेखक, अभिकल्पक, कवि, मानवतावादी और अन्वेषक थे। इनका जन्म रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में तारीख 9 अक्तूबर, 1874 को हुआ था। इनकी शिक्षा सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में हुई। वे इस विश्वविद्यालय में एक ही समय अनेक संकायों में अध्ययन करते रहे। बाद में विदेशों में उन्होंने कला का अध्ययन जारी रखा। विदेशों में शिक्षा के क्षेत्र में वैभवशाली सफलता प्राप्त कर सन् 1924 में वे भारत आए। यहां आकर उन्होंने मध्य एशिया के पर्वतीय क्षेत्रों में एक पंचवर्षीय कलात्मक/वैज्ञानिक अभियान का नेतृत्व किया। सन् 1928 में वे हिमालय की कुल्लू घाटी में आकर बस गए और अपने जीवन के अन्त तक वहीं रहे।

रोयरिख को अल्पवय में ही मान्यता और प्रसिद्धि प्राप्त हो गई थी। युवावस्था में ही बहुत से महत्वपूर्ण कार्य उन्हें सौंपे गए थे। एक कलाकार के रूप में उन्होंने जो रचनात्मक कार्य किया, वह प्रचुर मात्रा में था। अनेक भित्ति-चित्रों के अलावा उन्होंने लगभग 7000 रंगीन चित्र बनाये थे और साथ ही रूस के अनेक गिरजाघरों व सार्वजनिक इमारतों के लिए पच्चीकारी (मोज़ेक) की उत्कृष्ट डिजाइनें तैयार कीं।

लेखक के रूप में भी उनकी रचनाओं की संख्या पर्याप्त है। कला, संस्कृति, पुरातत्त्व और दार्शनिक विषयों पर उन्होंने अनेक पुस्तकें, विविध लेख और निबंध लिखे। उनका प्रकाशित साहित्य लगभग 30 जिल्दों में है, जिनमें कविताएं और नाटक सम्मिलित हैं।

रोयरिख विश्व शान्ति के लिए प्रयत्न करने वाले एक महान सांस्कृतिक नेता और कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सौंदर्य और ज्ञान से मानवीय एकता स्थापित हो सकती है। वे अनेक देशों की सांस्कृतिक संस्थाओं और समितियों के संस्थापक और प्रेरक थे। उन्होंने शान्ति और बेहतर अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव की स्थापना के लिए प्रयत्न किये। विश्व शांति की दिशा में उनका महान योगदान वह अंतर्राष्ट्रीय समझौता (पैक्ट) था, जिसके तहत युद्ध और नागरिक उथलपुथल के दौरान कला-निधियों और शैक्षणिक व वैज्ञानिक संस्थाओं की रक्षा की व्यवस्था की गयी।

अपने मानवतावादी कार्य में उन्हें अपनी पत्नी हेलेना और वैज्ञानिक व महान प्राच्यवेत्ता जार्ज तथा प्रतिभाशाली कलाकार स्वेतोस्लाव नामक दो पुत्रों से बड़ा सहयोग मिला।

प्रो. रोयरिख ने सारे विश्व का भ्रमण किया था। मध्य एशिया, मंगोलिया और तिब्बत में अनेक अभियानों का नेतृत्व उन्होंने किया। कुछ पश्चिमी हिमालय के क्षेत्रों में उन्होंने मानव-वंशीय (एथनालाजिकल), भाषा-वैज्ञानिक, वानस्पतिक और प्राणि-जगत संबंधी सर्वेक्षणों का प्रबंध किया। अनेक देशों ने इनका सम्मान किया था और वे विश्व की विभिन्न अकादमियों, अनेक शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के फैलो भी रहे। इनकी चित्रकला के नमूने विश्व के बड़े-बड़े संग्रहालयों में व कला-संग्रहों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

नेहरू, राधाकृष्णन् और रवींद्रनाथ ठाकुर रोयरिख के घनिष्ठ मित्रों में थे। उन्हें भारत और भारत के लोगों से उतना ही प्यार था जितना अपने देश व देशवासियों से। उन्होंने अपना यह प्रेम और भारतीय भावना को हिमालय पर आधारित अपने अनेक यशस्वी चित्रों में अंकित किया है। इन्ही चित्राकृतियों के कारण उन्हें 'मास्टर ग्राफ दि माउन्टेन्स' यानी 'पर्वतों के आचार्य' के रूप में ख्याति मिली। इनका देहान्त 13 दिसम्बर, 1947 को नग्गर, कुल्लू में हुआ था।

प्रो. रोयरिख की जन्म-शताब्दी के अवसर पर एक स्मारक डाक-टिकट निकालकर डाक-तार विभाग गौरव का अनुभव कर रहा है।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of issue	..	9-10-74
मूल्य वर्ग Denomination	..	1 रु. Re.
कुल आकार Overall size	..	3.91×2.90 सें. मी. cms.
मुद्रण आकार Printing size	..	3.56×2.54 सें. मी. cms.
प्रति शीट संख्या Number per issue sheet	..	35
रंग Colour	..	पीला और भूरा Yellow and Grey
छिद्रण Perforation	..	13×13
मुद्रित टिकटों की संख्या Number Printed	..	30,00,000
जलचिह्न Watermark	..	बिना जलचिह्न वाले चिपचिपे स्टाम्प कागज पर मुद्रित Unwatermarked adhesive stamp paper
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	..	फोटोग्रेव्योर Photogravure
डिजाइन और मुद्रण Designed and Printed at	..	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय India Security Press

डिजाइन का विवरण

इस डाक-टिकट का अभिप्राय हेनरी ड्राप्सी द्वारा तैयार किए गए निकोलाई रोयरिख के एक तमगे से ग्रहण किया गया है।

DESCRIPTION OF DESIGN

A medallion of Nicholas Roerich done by Henry Dropsy has been adopted as the motif of the stamp.

बिक्री की शर्तें

विदेशों से नये डाक-टिकट व प्रथम दिवस आवरण के आर्डर भारतीय डाक-टिकट संकलन ब्यूरो, बड़ा डाकघर, बम्बई-400001 के पते पर भेजिये। आर्डर के साथ ऐसा बैंक ड्राफ्ट या क्रॉस चेक भी भेजिये जो भारत में भुनाया जा सके।

TERMS OF SALE

Overseas orders for the supply of the new stamps and First Day Covers should be addressed to the **Indian Philatelic Bureau, G.P.O.,** Bombay-400001 and be accompanied by a bank draft or crossed cheque encashable in India.

भारतीय डाक-तार विभाग
INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

मूल्य Price 10 पै० P.

Produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of I. & B., Govt. of India, New Delhi for the Indian Posts & Telegraphs Department and printed at the National Printing Works, Delhi-110006.

7/13/74—PPI.

davp

ZELTA GRĀMATA

IN DEDICATION TO

FIFTY YEARS OF CREATIVE ACTIVITY

OF

NICHOLAS ROERICH

AND THE

FIRST BALTIC CONGRESS OF ROERICH SOCIETIES

10—X—1937

RĪGĀ, 1938

RĒRICHA MŪZEJA DRAUGU BIEDRĪBAS IZDEVUMS

ELIZABETES IELĀ 21-a, DZ. 7

Т. Я. ЕЛИЗАРЕНКОВА
В. Н. ТОПОРОВ

ЯЗЫК ПАЛИ

Т. Я. ЕЛИЗАРЕНКОВА
В. Н. ТОПОРОВ

ЯЗЫК ПАЛИ

Издание второе

В Музей Института
семьи Рерихов

Т. Елизаренкова
30/II-2003 г.
В Топоров

Москва
Издательская фирма
«Восточная литература» РАН
2003

Родной

Людмиле Степановне

на добрую память с

наилучшими пожеланиями

здоровья, добра, радости, света

с благодарностью и любовью

Тамара Петровна

26 августа 1997 г.

г. Самара

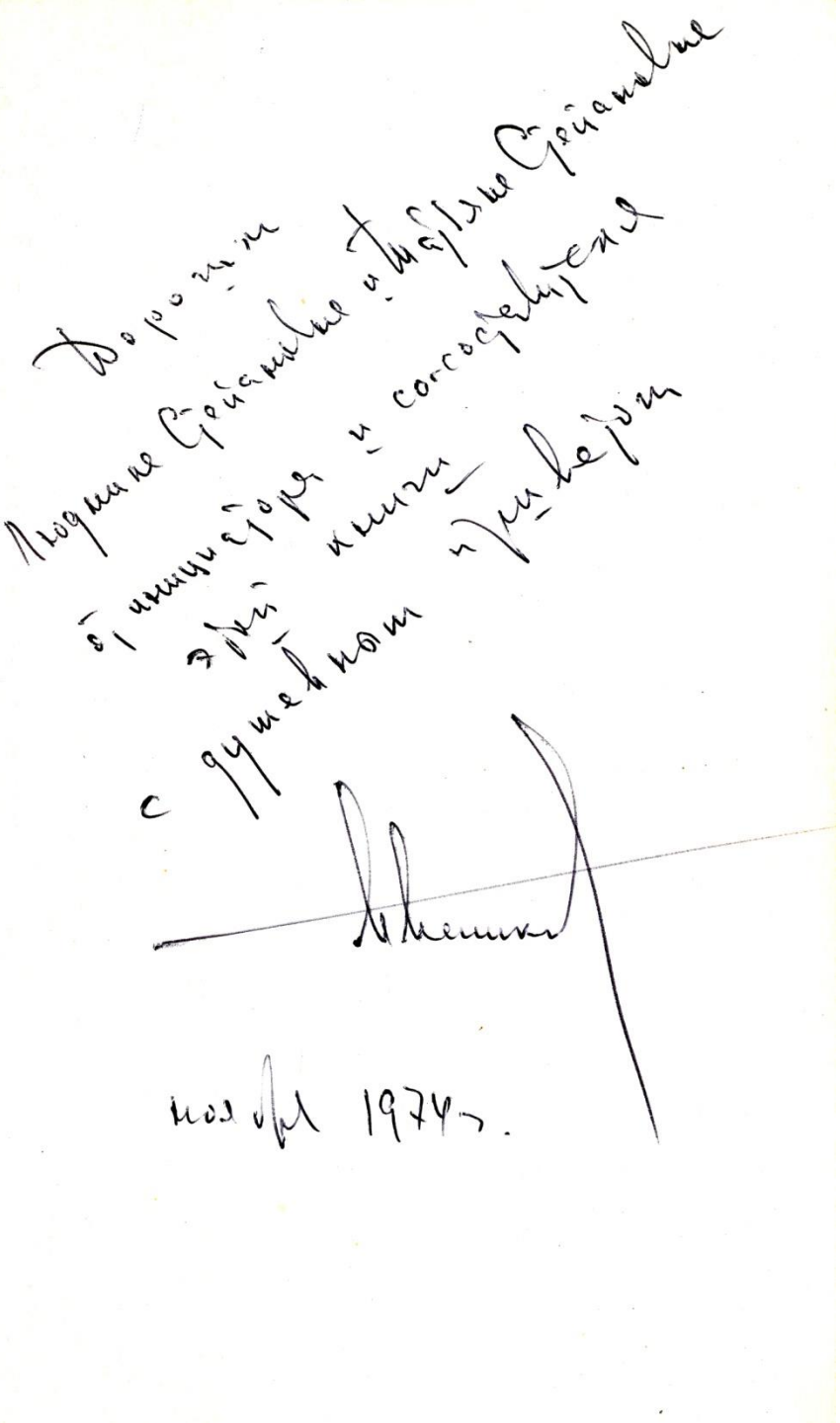

Дорогим

Людмиле Степановне и Марье Степановне

инициатору и сосоставителям

этой книги

с дружеским приветом

[illegible]

ноябрь 1974 г.

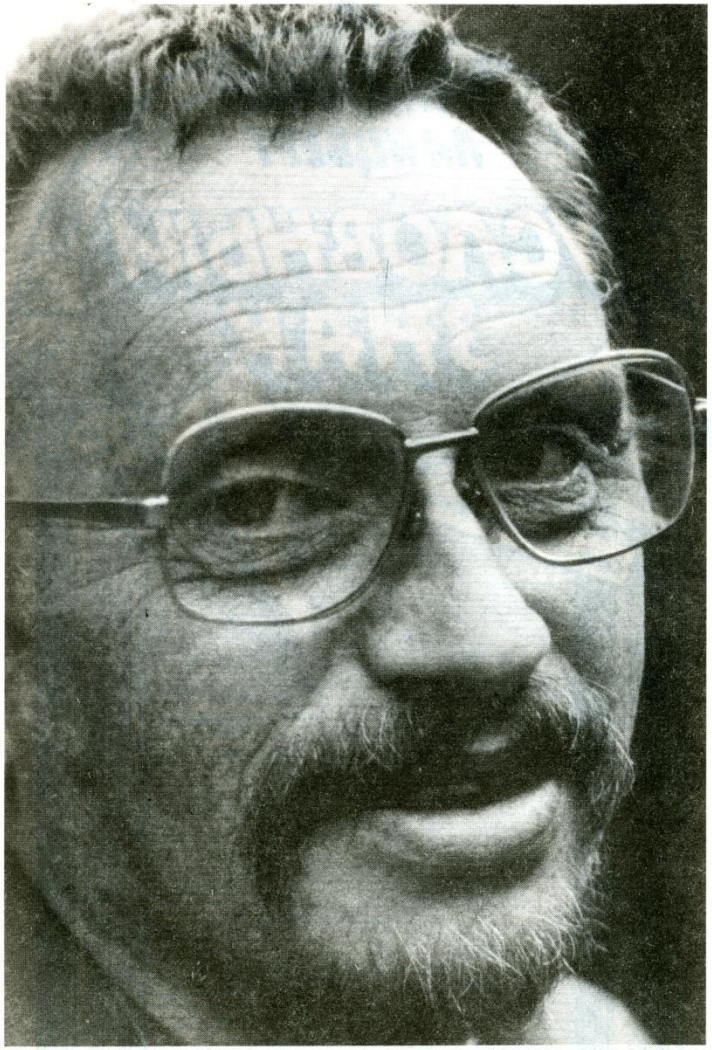

Дорогой Людмиле Степановне — с любовью и благодарностью.

[illegible]

15.05.97.

ГМИСР
БИБЛИОТЕКА
Инв. № 2393

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С.МИТУСОВОЙ * САНКТ-ПЕТЕРБУРГ *

85.313(2)
Р 51

Н.А.РИМСКОГО-КОРСАКОВА

ГМИСР
БИБЛИОТЕКА
Инв. №

Издательство
"Композитор"
Санкт-Петербург
1995

С пожеланием осуществить мечту о музее милого, симпатичного Семена Степановича Митусова

23.Х.'95

85.313(2)
Н 73

Н.С. НОВИКОВ

„ЗВУК РОДНОЙ СТРУНЫ...“

ГМИСР
БИБЛИОТЕКА
Инв. № 2984

Дорогим родственникам
Мусоргского Людмиле Степановне
и Татьяне Степановне
Митусовым с
благодарностью за помощь
в работе над книгой
Николай Новиков
Великие Луки

МОСКВА
„СОВЕТСКАЯ РОССИЯ“
1989

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С.МИТУСОВА * САНКТ-ПЕТЕРБУРГ *

85.16
Б 89

Валерий БРУНЦЕВ

3

Фотографии

Дорогой Людмиле Степановне — самому близкому человеку современности к семье Рерихов.
С уважением
В. Брун

ГМИСР
БИБЛИОТЕКА
Инв. № 5884

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С. МИТУСОВА
САНКТ-ПЕТЕРБУРГ

Издательство
«ПЕТРОВСКИЙ ФОНД»

Санкт-Петербург
1999

17.10.99 (125 лет Н.К. Рериха)

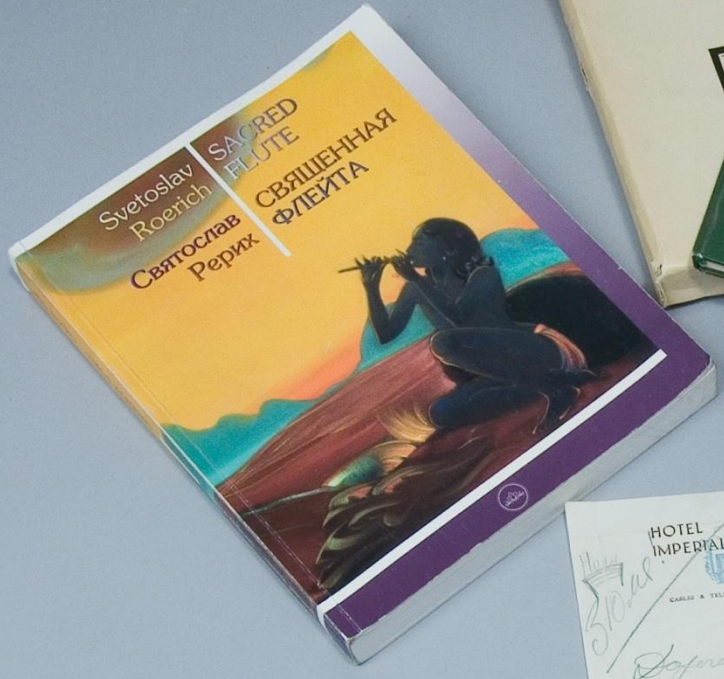
Svetoslav Roerich
Святослав Рерих
SACRED FLUTE
СВЯЩЕННАЯ ФЛЕЙТА

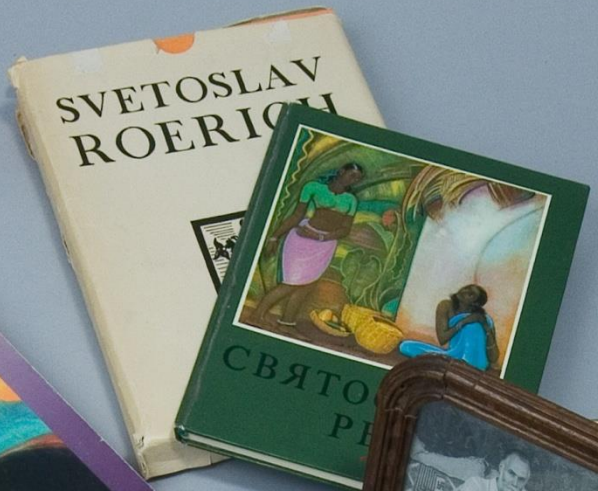
SVETOSLAV

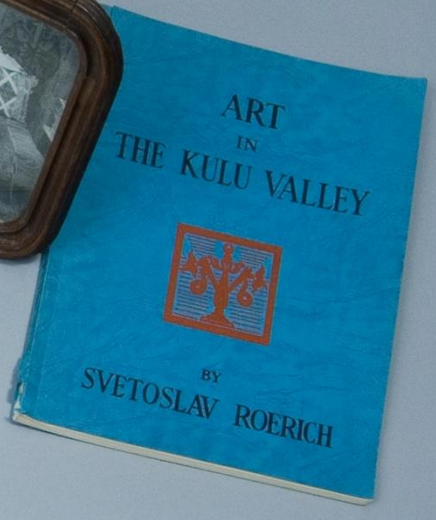
ART
IN
THE KULU VALLEY
BY
SVETOSLAV ROERICH

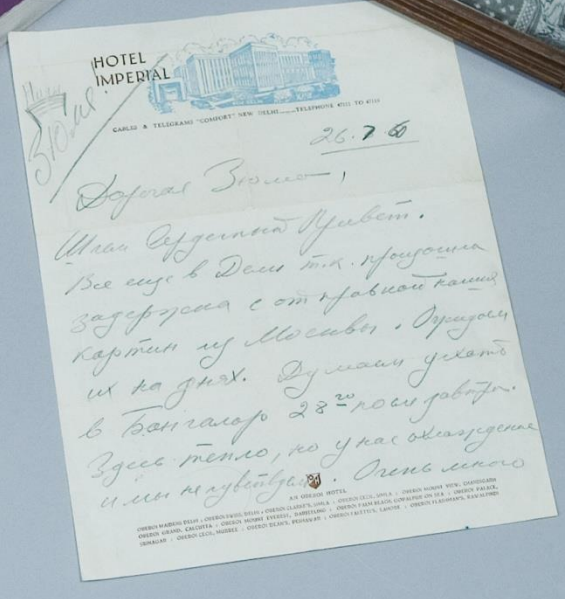
HOTEL
IMPERIAL
26.7.60

84Р7
Ю96

Т.А.Юшко

МЕДЬ и СЕРЕБРО

СТИХИ

БИБЛИОТЕКА ГМИСР
Инв. № 2361

МЕМОРИАЛЬНОЕ СОБРАНИЕ С.С.МИТУСОВА * САНКТ-ПЕТЕРБУРГ *

Людмиле Степановне
Митусовой
с глубоким уважением
и любовью.
Солнца и звезд Вам,
дорогая Людмила
Степановна!

[signature] 13 марта 1991 г.

ТИБЕТСКО-САНСКРИТСКО-РУССКО-
-АНГЛИЙСКИЙ СЛОВАРЬ
(МАКЕТ)
Составил Ю. Н. РЕРИХ
Ю. Н. РЕРИХ
ПО ТРОПАМ
СРЕДИННОЙ АЗИИ
Ю.Н.РЕРИХ
ИЗБРАННЫЕ ТРУДЫ
РЕРИХ